

आचार्य भरत की रचनाएँ

डॉ०इच्छा नायर,

एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत तबला

महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

सार-संक्षेप

आचार्य भरत एक प्रतिभाशाली, ज्ञाता और कलाकार व्यक्ति थे। आचार्य अभिनवगुप्त की 'अभिनवभारती', आचार्य नन्दिकेश्वर के 'अभिनयदर्पण', आचार्य धनञ्जय के 'दशरूप', शारदातनय के भावप्रकाशन, सिंहभूपाल के रसार्णवसुधाकर, सागरनंदी के नाटक लक्षण-रत्नकोश आदि शास्त्रीय रचनाओं में भी भरत को बड़ी श्रद्धा से स्मरण किया गया है।

आचार्य भरत की रचनाएँ — आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में अन्य तीन और रचनाओं का उल्लेख स्वयं किया है। भरत मुनि ने 'महेन्द्र विजय'⁶ नामक नाटक, 'त्रिपुरदाह'⁷ नामक डिम तथा 'अमृतमंथन'⁸ नामक समवकार की रचना भी की थी। महेन्द्रविजय, त्रिपुरदाह तथा अमृतमंथन रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं। इस प्रकार आचार्य भरत की चार रचनाओं का उल्लेख मिलता है। आचार्य भरत की अन्तिम तथा सुप्रसिद्ध रचना 'नाट्यशास्त्र' है। जो कि उनका उपलब्ध ग्रन्थ है। इसी ग्रन्थ में उपर्युक्त तीनों रचनाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। नाट्यशास्त्र अनेक विद्याओं और शास्त्रों का स्रोत ग्रन्थ माना जाता है। ललित कलाओं के विश्वकोष इस ग्रन्थ को शास्त्रकारों ने नाट्यवेद तथा आचार्य भरत को मुनि के रूप में आदरपूर्वक स्मरण किया है। नाट्यशास्त्र यद्यपि नाट्य के विषय का ग्रन्थ है परंतु इसमें विश्व की समस्त कलाओं का समावेश है। वर्तमान नाट्यशास्त्र लगभग छह हजार श्लोकों का ग्रन्थ है जिसमें 36 अध्याय हैं। वर्तमान में नाट्यशास्त्र के चार संस्करण मुख्य रूप से उपलब्ध हैं — (1) गायकवाड़ ओरिएंटल सीरीज़, बड़ौदा (2) निर्णय सागर प्रेस, बम्बई (3) चौखम्भा संस्कृत सीरीज़, विद्या विलास प्रेस, वाराणसी (4) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रेस द्वारा प्रकाशित।

Key Words : आचार्य भरत, भरत की अन्य रचनाएँ, नाट्यशास्त्र की विषय-वस्तु, वर्तमान संस्करण।

आचार्य भरत की रचनाएँ

डॉ० इच्छा नायर,

एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत तबला

महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

आचार्य भरत एक प्रतिभाशाली, ज्ञाता और कलाकार व्यक्ति थे। अत्यन्त पारदर्शी व्यक्तित्व होने के कारण उन्हें मुनि के रूप में स्मरण किया गया। महाकवि कालिदास तथा भवभूति ने भी भरतमुनि का नाम अत्यन्त आदरपूर्वक उद्धृत किया है। महाकवि कालिदास ने 'विक्रमोर्वशीयम्' के संदर्भ में देवदूत द्वारा कहलाया है--- 'चित्रलेखा! उर्वशी को शीघ्र ले आओ। भरतमुनि ने आप लोगों को आठ रसों से युक्त जिस नाटक का प्रशिक्षण दिया है, भगवान् इन्द्र और लोकपाल उसका सुंदर अभिनय देखना चाहते हैं।'

चित्रलेखे, त्वरय त्वरयोर्वशीम्-

मुनिनाभरतेन यः प्रयोगो भवतीष्वष्टरसाश्रयो नियुक्तः।

ललिताभिनयं तमद्य भर्ता मरुता द्रष्टुमनाः सलोकपालः।।¹

“..... तं स्वहस्तलिखितं मुनिर्भगवान् व्यसृजद्-भगवतो भरतस्य तौर्यत्रिकसूत्रधारस्य।... स किल भगवान् भरतस्तमप्सरोभिः प्रयोगयिष्यतीति।²

आचार्य अभिनवगुप्त की 'अभिनवभारती', आचार्य नन्दिकेश्वर के 'अभिनयदर्पण', आचार्य धनञ्जय के 'दशरूप' में भी भरत का उल्लेख सम्मानपूर्वक किया गया है। दशरूपककार आचार्य धनञ्जय ने आरंभिक श्लोक में आचार्य भरत एवं भगवान् विष्णु और आचार्य भरत की वंदना की है—

दशरूपानुकारेण यस्य माद्यन्ति भावकाः।

नमः सर्वविदे तस्मै विष्णवे भरताय च।।³

उपर्युक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त शारदातनय के भावप्रकाशन, सिंहभूपाल के रसार्णवसुधाकर, सागरनंदी के नाटक लक्षण-रत्नकोश आदि शास्त्रीय रचनाओं में भी भरत को बड़ी श्रद्धा से स्मरण किया गया है। भावप्रकाशन में जो कथा है कि ब्रम्हा ने एक मुनि को पाँच शिष्यों सहित नाट्य की शिक्षा दी वह मुनि भरत ही हैं।

आचार्य भरत एक पौराणिक व्यक्ति हैं जिनकी पहुँच देवलोक से पृथ्वी तक है। जैसा कि नाट्यशास्त्र में वर्णित है—

आज्ञापितो विदित्वाऽहं नाट्यवेदं पितामहात् ।

पुत्रानध्यापयं योग्यान् प्रयोगं चापि तत्त्वतः । 14

“पितामह ब्रह्मा से आज्ञा पाकर उन्हीं से नाट्यवेद को प्राप्त कर मैंने इसके प्रयोगों को अपने योग्य पुत्रों को पढ़ाया।” पितामह ब्रह्मा से नाट्य का ज्ञान प्राप्त करना और उसे इन्द्र की सभा में प्रस्तुत करना इस बात का प्रमाण है कि भरतमुनि की गति देवलोक तक थी। आचार्य नन्दिकेश्वर ने भी अभिनय दर्पण में स्पष्ट किया है कि आचार्य भरत ने शिव जी के सम्मुख नाट्य प्रस्तुत किया तथा शिव पार्वती का स्नेह भी भरत को प्राप्त था। शिव जी ने उन्हें अपने शिष्य तण्डु द्वारा ताण्डव तथा पार्वती जी ने स्वयं लास्य की शिक्षा दी थी —

“ततश्च भरतः ----- पार्वत्या समदीदिशत् । 15”

अतः यह भी स्पष्ट है कि आचार्य भरत ने हिमालय पर ही अपना निवास स्थान भी बनाया था जहाँ वह अपने पुत्रों तथा शिष्यों के साथ रहकर नाट्य प्रयोग का अभ्यास करते होंगे। कतिपय विद्वानों ने नाट्यशास्त्र में प्राप्त होने वाले वृक्षों आदि के वर्णन से भरतमुनि को कश्मीर के निकट किसी निवास स्थल का मानने की अनुशंसा की है जो कि इसलिए भी अधिक समीचीन जान पड़ता है क्योंकि कश्मीर से सरलतापूर्वक हिमालय, देवलोक तथा मनुष्य लोक से संपर्क होता होगा। अधिकांश कश्मीरी विद्वानों जैसे — भट्टलोल्लट, श्रीशंकुक, भट्टनायक तथा अभिनवगुप्तपाद आदि ने ही नाट्यशास्त्र की व्याख्याएँ लिखी हैं।

आचार्य भरत की रचनाएँ

आचार्य भरत की एकमात्र रचना 'नाट्यशास्त्र' ही उपलब्ध है। आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में अन्य तीन और रचनाओं का उल्लेख स्वयं किया है। भरत मुनि ने 'महेन्द्र विजय'⁶ नामक नाटक, 'त्रिपुरदाह'⁷ नामक डिम तथा 'अमृतमंथन'⁸ नामक समवकार की रचना भी की थी। महेन्द्रविजय, त्रिपुरदाह तथा अमृतमंथन रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं। इस प्रकार आचार्य भरत की चार रचनाओं का उल्लेख मिलता है।

महेन्द्र विजय

'नाटक' रूपकों का उत्कृष्टतम रूप माना गया है। रूपकों के अनेक प्रकार में सर्वप्रमुख नाटक का स्थान है। इसका कथानक सदैव सुविख्यात् होता है। इसका नायक सदैव राजा, राजर्षि या देवपुरुष ही होता है। श्रृंगार या वीर रस इस नाटक के अंगी रस होते हैं। 'महेन्द्र विजय' नामक नाटक एक प्रख्यात इतिवृत्त है जो इंद्र की असुरों पर विजय से संबंधित है। इस नाटक के नायक देवराज इंद्र हैं तथा इसका अंगी रस 'वीर रस' है। कहा जाता है कि इस नाटक को देखकर असुर क्रुद्ध हुए और उन्होंने नाटक में विघ्न उपस्थित कर दिया।⁹ महेन्द्र विजय नामक नाटक अनुपलब्ध है किन्तु इसका उल्लेख नाट्यशास्त्र में तथा परवर्ती ग्रन्थों में भी पाया जाता है।

अमृतमंथन

भरतमुनि की दूसरी रचना है 'अमृतमंथन' नामक समवकार। समवकार, रूपक का ही एक प्रकार होता है इसका कथानक भी प्रख्यात होना चाहिए। उदात्त प्रकृति के देव एवं दानव आदि बारह नायक होते हैं। इसमें तीन अंक होते हैं। नाट्यशास्त्र के वर्णन के अनुसार क्रोधित असुरों को प्रसन्न करने के लिए ब्रह्मा जी ने भरतमुनि को 'अमृतमंथन' का प्रयोग करने को कहा।¹⁰ अमृतमंथन का नाम किसी-किसी ग्रंथ में 'समुद्रमंथन' भी मिलता है। भरतमुनि की यह रचना भी अप्राप्य है इसका भी उल्लेख केवल नाट्यशास्त्र तथा बाद के ग्रन्थों में किया गया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि 'समवकार' के जो भी लक्षण आचार्यों ने बताए हैं उनमें केवल अमृतमंथन का ही उदाहरण के रूप में वर्णन किया गया है। इसलिए प्रतीत होता है कि 'अमृतमंथन' ही एकमात्र समवकार था।

त्रिपुरदाह

भरतमुनि की तीसरी रचना है 'त्रिपुरदाह'। यह एक 'डिम' है। डिम भी रूपक का ही एक प्रकार होता है। डिम की कथावस्तु भी प्रख्यात होनी चाहिए। इसमें देवता, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, महासर्प, भूतप्रेत, पिशाच आदि सोलह नायक होते हैं। इसमें रौद्र रस मुख्य रस होता है¹¹। नाट्यशास्त्र के अनुसार ब्रह्मा जी ने भरतमुनि को भगवान शिव के सामने नाट्य प्रदर्शन का आदेश दिया तब भरतमुनि ने शिव जी के समक्ष त्रिपुरदाह नामक डिम का प्रदर्शन किया। इसका कथानक शिव जी से ही संबंधित था। भरतमुनि के इस डिम के प्रयोग को देखकर शिव जी अतिप्रसन्न हुए और शिव जी ने अपने शिष्य 'तण्डु' से भरतमुनि को नृत्य की शिक्षा दिलवाई। त्रिपुरदाह नामक रचना भी अनुपलब्ध है। इसका उल्लेख नाट्यशास्त्र तथा अन्य बाद के ग्रन्थों में मिलता है।

नाट्यशास्त्र

आचार्य भरत की अन्तिम तथा सुप्रसिद्ध रचना 'नाट्यशास्त्र' है। जो कि उनका उपलब्ध ग्रन्थ है। इसी ग्रन्थ में उपर्युक्त तीनों रचनाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। आचार्य भरत का नाट्यशास्त्र एक विश्वकोषात्मक ग्रन्थ है। उसे अनेक विद्याओं और शास्त्रों का स्रोत ग्रन्थ माना जाता है। आचार्य भरत ने भारत की समस्त कला चेतना को अपनी प्रतिभा से अनुप्राणित किया था जिसका कीर्ति स्तंभ है उनका ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र'। ललित कलाओं के विश्वकोष इस ग्रन्थ को शास्त्रकारों ने नाट्यवेद तथा आचार्य भरत को मुनि के रूप में आदरपूर्वक स्मरण किया है। महामुनि भरत ने इसे लोकोपयोगी रूप देकर नाट्यकला को जनमन रंजन का माध्यम बनाया —

धर्ममर्थ्यं यशस्य च सोपदेशं ससंग्रहम् ।

भविष्यतश्च लोकस्य सर्वकर्मानुदर्शकम् ।।

सर्वशास्त्रार्थसम्पन्नं सर्वशिल्पप्रवर्तकम् ।

नाट्याख्यं पंचमंवेद सेतिहासं करोम्यहम् ।।¹²

“मैं इस नाट्यशास्त्र नामक पंचमवेद की रचना करता हूँ उसमें धर्म, अर्थ, यश और शास्त्रवचनों के उपदेश संगृहीत हैं। उसमें लोक मंगल के समस्त भावी कर्मों का दिग्दर्शन किया गया है। उसमें समस्त शास्त्रों के अर्थ की अभिव्यक्ति हुई है। वह सब प्रकार के शिल्पों का प्रवर्तक और अपने आप में इतिहास है।”

नाट्यशास्त्र यद्यपि नाट्य के विषय का ग्रन्थ है परंतु इसमें विश्व की समस्त कलाओं का समावेश है। स्वयं भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र का परिचय देते हुए लिखा है —

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला ।

न स योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते ।¹³

वस्तुतः यही बात नाट्यशास्त्र पर भी चरितार्थ होती है। नाट्यशास्त्र न केवल नाट्य अपितु सभी ललित कलाओं एवं उपयोगी कलाओं का ग्रन्थ है।

वर्तमान नाट्यशास्त्र लगभग छह हजार श्लोकों का ग्रन्थ है जिसमें 36 अध्याय हैं। कुछ विद्वान अध्यायों की संख्या 37 मांगते हैं। शारदातनय के ‘भावप्रकाशन’ में नाट्यशास्त्र के दो रूप बताए हैं पहला 12000 श्लोकों का जिसे द्वादश सहस्री और दूसरा 6000 श्लोकों का जिसे षट् सहस्री कहा जाता है।

एवं द्वादशसाहस्रैः श्लोकैरेकं तदर्थतः ।

षड्भिः श्लोकसहस्रैर्यो नाट्यवेदस्य संग्रहः ।।

भरतैनमितस्तेषां प्रख्यातो भरताह्वयः ।¹⁴

भरतकृत नाट्यशास्त्र भारतीय संगीत की अद्वितीय तथा अनुपम कृति है। इसे नाट्यशास्त्र, योगशास्त्र अथवा मोक्षशास्त्र भी कहा जा सकता है। अतिसूक्ष्म एवं वैज्ञानिक विवेचन के कारण यह नाट्यशास्त्र है, अनहद नाद एवं नृत्य नाट्य का संबंध योग से बताने के कारण यह योगशास्त्र है, अनहद संगीत को मोक्षकारी बताने के कारण यह मोक्षशास्त्र है। भरतमुनि महर्षि पाणिनी की तरह नाट्यविद्या के सूत्रकार के रूप में परंपरा से प्रसिद्ध हैं। इसीलिए नाट्यशास्त्र को भरतसूत्र भी कहा जाता है।

नाट्यशास्त्र अपने व्यापक विषय के विस्तार के कारण आज तक विद्वानों को आकर्षित कर रहा है। 36 अध्यायों के विषय अत्यंत संक्षेप में इस प्रकार हैं—

1. प्रथम अध्याय — नाट्यवेद की उत्पत्ति का वर्णन ।
2. द्वितीय अध्याय — तीन प्रकार के नाट्यगृहों की निर्माण-विधि ।
3. तृतीय अध्याय — नाट्याचार्य के प्राथमिक कर्तव्य, देवस्तुति का वर्णन
4. चतुर्थ अध्याय — ताण्डव नृत्य का वर्णन
5. पंचम अध्याय — नान्दी आदि का वर्णन
6. षष्ठ अध्याय — रस निष्पत्ति तथा 8 रसों का वर्णन
7. सप्तम अध्याय — विभाव, अनुभाव, संचारी का वर्णन
8. अष्टम अध्याय — अभिनय के चार प्रकारों का वर्णन
9. नवम अध्याय — संयुक्त तथा असंयुक्त हस्त
10. दशम अध्याय — पार्श्व, जंघा, कटि, वक्ष द्वारा किए जाने वाले अभिनय
11. एकादश अध्याय — भौमी, आकाशचारियों का वर्णन
12. द्वादश अध्याय — चारियों से बनने वाले मंडलों का वर्णन
13. त्रयोदश अध्याय — विभिन्न पात्रों द्वारा प्रयुक्त गतियाँ
14. चतुर्दश अध्याय — विभिन्न प्रदेशों की प्रवृत्तियाँ
15. पंचदश अध्याय — व्याकरण और भाषाशास्त्र
16. षोडश अध्याय — छंदों का वर्णन
17. सप्तदश अध्याय — काव्य लक्षण, अलंकार आदि
18. अष्टदश अध्याय — चतुर्विद भाषा तथा सप्तविभाषा
19. एकोनविंश अध्याय — काकु, स्वर
20. विंश अध्याय — दशरूपको तथा लास्यांगों का वर्णन
21. एकविंश अध्याय — इतिवृत्त की पंचसंधियाँ और उनके अंग
22. द्वाविंश अध्याय — विभिन्न वृत्तियाँ और उनके अंग
23. त्रयोविंश अध्याय — नेपथ्य का वर्णन
24. चतुर्विंश अध्याय — हाव, भाव तथा हेला का वर्णन
25. पंचविंश अध्याय — वेश्याओं तथा वैशिकों का वर्णन
26. षड्विंश अध्याय — अभिनय संबंधी शेष वर्णन
27. सप्तविंश अध्याय — रूपकों तथा नाट्यमंडली आदि का वर्णन
28. अष्टाविंशति अध्याय — चतुर्विद वाद्य तथा स्वरों का विवेचन

29. एकोनत्रिंश अध्याय — तत् वाद्य तथा वादन विधि का वर्णन
30. त्रिंश अध्याय — सुषिर वाद्य तथा वादन विधि का वर्णन
31. एकत्रिंश अध्याय — लय, ताल, यति, आसारित आदि का वर्णन
32. द्वात्रिंश अध्याय — ध्रुवा गीतों का वर्णन
33. त्रयत्रिंश अध्याय — अवनद्ध वाद्य तथा वादन विधि
34. चतुस्त्रिंश अध्याय — विभिन्न चरित्रों तथा पात्रों का वर्णन
35. पंचत्रिंश अध्याय — पात्रों की भूमिका का वर्णन
36. षट्त्रिंश अध्याय — नाट्य के धरती पर अवतरण का वर्णन

आधुनिक काल में प्रचलित संगीत का आदि पुरुष कहलाने का अधिकार आचार्य भरत को ही है क्योंकि संगीत की सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रामाणिक कृति इन्हीं की है। वर्तमान में नाट्यशास्त्र के चार संस्करण मुख्य रूप से उपलब्ध हैं — (1) गायकवाड़ ओरिएंटल सीरीज़, बड़ौदा (2) निर्णय सागर प्रेस, बम्बई (3) चौखम्भा संस्कृत सीरीज़, विद्या विलास प्रेस, वाराणसी (4) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रेस द्वारा प्रकाशित।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. विक्रमोर्वशीयम् , 2/17
2. उत्तररामचरितम् , चतुर्थ अंक
3. दशरूपकम् , 1/2
4. नाट्यशास्त्र , 1/25
5. अभिनयदर्पण , 2,3,4
6. नाट्यशास्त्र , 1/55-56
7. नाट्यशास्त्र , 4/2,3
8. नाट्यशास्त्र , 4/10

9. नाट्यशास्त्र , 1/59-68
10. नाट्यशास्त्र , 4/2-4
11. दशरूपक , 3/57-59
12. नाट्यशास्त्र , 1/14,15
13. नाट्यशास्त्र , 1/117
14. भावप्रकाशन, दश. अधि.